इन्टर (सिविल्स वहि)
मैथिली

प्रो० रंजीत कुमार दास
(अतिथि व्याख्याता) M/T
मैथिली विभाग
R.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (LNMU) Darbhanga

Topic :- 'बाबी' कथाक वैशिष्ट्य

श्री प्रभासकुमार चौधरीक बाबी कथामे प्राचीनता ओ नवीनताक संघर्षक निरूपण भेल अछि। बाबी कथा मध्यवर्गीय समाजमे रहैत सामन्ती व्यवस्थाक कथा थिक। जमींदारी प्रथाक विघटनक कथा कहल गेल छैक। निरूपण कइ वो देखावटी शेखी आओर पारम्परिक राग-द्वेषक कारण लबकिछु कुआ देबाक कथा थिक। आमीरीक कब्र पर पनपैत गरीबीक कथा थिक। बाबी विधवा छलीह। उत्तरवरीया घरक बिचला कोठलीमे रहैत। जिनमे अपने मानल कए रातिमे सेहो दिनुक पानि देल भात खाए लैत छलीह। आँगनमे एक दिन ओ राजरानी जकाँ आयल छलीह। क्रमशः पारिवारिक स्थिति खराब होइत गेलैक आ बाबी एक लोटा चाउर आ एक लोटी तेल बेंच लाकर लगलीह। बाबीकेँ सेहन्ता छलनि जे

पोताक विवाह देखी। मुदा हुनक सेहन्ता नहि पुरा भेलनि। गंगालाभ करए जखन ओ जाइत छलाह तँ गामक लोक हुनक दर्शन करए अबैत छथि।

हुनक मृत्युक पश्चात् लोक बाजए लागल जे दु-दुटा बेटा रहैत आगि देलकनि नाति। बाबीक श्राद्ध मे एक हजार ब्राह्मण कच्चाहि कए खएलक। बाबीक पोती लोककेँ मिलकऽ लगलैक/ लेखकक विवाह करौलनि तथा बाबीक इच्छा अपन पत्नीसँ पूरा करौलनि। लेखककेँ लगलनि जेना तारा बनि बाबी हुनका लोकनिकेँ आशीर्वाद दऽ रहल छथि।

Sanjeet Kumar